# अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

## 27वाँ अधिवेशन

तुलसी भवन जमशेदपुर ( झारखण्ड )

16-17 दिसम्बर, 2023

# अध्यक्षीय भाषण

## डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

अध्यक्ष

27वाँ अधिवेशन

मंच पर विराज रहल मुख्य अतिथि महोदय, विशिष्ठ अतिथि गण, आयोजन समिति के संरक्षक , स्वागत अध्यक्ष आ स्वागत मंत्री, सभा में देश-विदेश के कोना-कोना से पधारल भोजपुरी भाषा साहित्य के एक से एक विद्वान, लेखक, कवि, साहित्यकार लोग आ सभा के अँखियान कर रहल मातृभाषा भोजपुरी के प्रेमी भाई बहिन सभे !

जय भोजपुरी, जोहार !

सबसे पहिले हम औद्योगिक तिरिथ जमशेदपुर के एह धरती का माटी के माथे लगावत बानी, जे ना खाली अपना कारखाना में लोहा पघिला-पघिला के किसिम-किसिम के जिनिस बनावेले आ एह देश के विकास में योगदान देवेले, बलुक आपन करेजा पघिला के तरह-तरह के साहित्य रचेले । ई उहे धरती ह जहाँ मेजर चंद्रभूषण सिन्हा, डॉ० सत्यदेव ओझा, डॉ० बच्चन पाठक सलिल, डॉ० रसिक बिहारी ओझा निभीक, डॉ० बालेश्वरराम यादव, परमेश्वर दूबे शाहाबादी, हरिशंकर वर्मा, रामवचन तिवारी आ मृगेंद्र प्रताप सिंह जइसन मातृभाषा प्रेमी लोग पिछलकी सदी के पाँचवाँ दशक से भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर जवन अलख जगवलें, ऊ आजो जागल बा । एह धरती के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास में अहम योगदान बा, जवना के गवाही एह धरती पर सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन दे रहल बा ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय परम्परा में भोजपुरी के भाषा रूप में प्रमाणित करेवाला प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ० उदय नारायण तिवारी आ हिन्दी के प्रकांड विद्वान डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी से ले के प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ० रिपुसूदन श्रीवास्तव आ संस्कृत-हिन्दी-भोजपुरी के आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन जी तक छब्बीस गो एक से एक विद्वान, साहित्यकार, लोकभाषा मर्मज्ञ लोग के नाम शामिल बा, जेकरा से भोजपुरी के भाषा-साहित्य के मान-सम्मान बढ़ल बा, सांगठनिक क्षमता का बल मिलल बा । ओह परम्परा में हमरा जइसन अदना मनई के अध्यक्ष पद पर बइठा के जवन विश्वास संगठन के लोग कइले बा, हम ओह लोग के विश्वास पर खरा उतरे के कोशिश करब । एह विश्वास आ सम्मान खातिर हम हिरदया से सभे के आभारी बानी ।

वाणभट्ट का 'हर्षचरित' आ स्वयंभूदेव के 'पउमचरिअ' के



www.bhojpurisahityangan.com

मानीं त भोजपुरी भाषा में साहित्य के शुरुआत सातवीं शताब्दी में भइल, जब सोन नद से पछिम पितृकूट (आज के पीरो) गॉव में दू गो कवि ईशान चंद आ बेनीमाधव (बर्नकवि) गाँव के बोली में कविता करत रहलें, माने भोजपुरी में कविता करत रहलें । हालांकि रामचंद्र शुक्ल जी आ हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ओह के देसी भाषा कहले बानी आ ओकरा के अपभ्रंश से अलग मनले बानी । तब से ले के अब तक भोजपुरी भाषा आ साहित्य दूनों के सतत विकास होत रहल बा । एह बात में दम एह से बा कि सातवीं सदी के बादे से अपभ्रंश भाषा से आधुनिक भारतीय आर्य भाषा सब विकसित होखे लागल रहे । एह सोरह सै बरिस के जतरा में सिद्ध आ नाथ पंथ के साहित्य में भोजपुरी के रूप लखार होखे लागल रहे, तब से शुरु कर के लोकगाथा, आध्यात्मिक परंपरा के संत काव्य, राष्ट्रीय काव्य धारा, प्रकृति प्रेम आ आधुनिक भाव बोध के कविता विकसित भइल आ आपन पहचान बनवलस । देश के स्वतंत्रता के पहिले भोजपुरिया लोग हिन्दी के विकास में लागल रहे, काहे से कि आजादी खातिर एकता जरूरी रहे आ एकता खातिर एगो भाषा के । एही से हिन्दी के बनावल गइल आ ओकरा के समृद्ध कइल गइल । भोजपुरिया लोग के धेयान बेसी ओनही रहल । जब देश आजाद हो गइल तब, ओह लोग के धेयान अपना मातृभाषा के विकास के ओर गइल । ओकरा बाद भोजपुरी में विविध विधा में साहित्य सिरजे के सिलसिला शुरु भइल आ अब हर विधा में साहित्य उपलब्ध बा । बाकिर, भोजपुरी से कच्चा माल लेके हिन्दी में उत्पादन करेवाला लोग मातृभाषा भोजपुरी के भुला गइल आ हिंदी के हो के रह गइल । ई त भोजपुरी भाषा के बल-बउसाव अइसन बा कि ऊ बिना सरकारी मान्यता-सहायता के टिकल भर नइखे, आगहूँ बढ़ रहल बा । प्रसिद्ध भाषा सर्वेक्षक गणेशदेवी के मानीं त आज के समय में



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी सबसे तेजी से विकसित हो रहल भाषा बा आ कई गो मान्यता प्राप्त भाषा से बेसी मानल-जानल जा रहल बा । भोजपुरी भाषा आ साहित्य का ना त धर्म के आश्रय मिलल आ ना राज्य के । ई जन के आश्रय में रहे, अबहूँ बा आ आगहूँ रहे के उमेद कइल जा सकेला ।

भोजपुरिया धरती निरगुन संप्रदाय के आध्यात्मिक धरती ह । भोजपुरिया धरती पर दरियादासी, शिवनारायनी, बावरी, सरभंग आ सखी संप्रदाय के धारा बहल, जवना में हर एक तबका से, हर जाति से आवेवाला संत आपन आध्यात्मिक साधना कइलें आ ओह में से बहुत लोग आपन बात जन सामान्य तक पहुँचावेला भोजपुरी भाषा में पद रचलें । भोजपुरिया क्षेत्र देश के अंग्रेजन से आजाद करावे खातिर सबसे पहिले जुझार कइलस । 1760 ई० के आस पास तमकुही राज्य के फतेह बहादुर शाही लगातार कई बरिस ले छापामार युद्ध करत रह गइलें आ पकड़ में ना अइलें । 1857 ई० में बैरकपुर छावनी में सिपाही विद्रोह के सूत्रपात करेवाला मंगल पाण्डेय भोजपुरिये रहस आ स्वतंत्रता के बिगुल फूँकेवाला बाबू कुँवर सिंह भोजपुरिये, जे अंग्रेजन के पानी पिअवलें । निलहा आन्दोलन भोजपुरिया इलाका चंपारन शुरु कइलस आ राजकुमार शुक्ल के लगेर कइला पर मोहनदास करमचंद गांधी चंपारन अइलें, जहाँ उनका सत्य के आग्रह का पहिला बेर सफलता मिलल अउर एतहीं से उनका महात्मा गांधी बने के मार्ग प्रशस्त भइल । एह सबसे भोजपुरी क्षेत्र में राष्ट्रीयता के प्रबल धारा बहल आ भोजपुरी भाषा में एक से एक देशभक्ति के रचनाकार भइलें । भोजपुरी में दलित-विमर्श, नारी-विमर्श, कृषक-विमर्श, प्रवासन के साहित्य आन भाषा से पहिले लिखाइल । समाज के समस्या, जइसे- नशाबंदी, अनमेल-विवाह, विधवा के समस्या, बूढ़ लोग के समस्या के सोझा ले आके ओकरा



www.bhojpurisahityangan.com

समाधान खातिर भोजपुरी साहित्य लगभग सै बरिस पहिले आवाज उठवलस । आजादी के बाद देश में घटेवाली हर एक घटना आ हर एक उतार चढ़ाव से भोजपुरी साहित्य तटस्थ आ निरपेक्ष ना रहल, ओह के समेट के चलल । ऊ चाहे भारत-चीन युद्ध होखे, भारत-पाकिस्तान युद्ध होखे, कारगिल युद्ध होखे भोजपुरी साहित्य देश के साथ खड़ा रहल आ आपन आवाज बुलंद कइलस । तब नू रेडियो पेकिंग कहत रहे कि "भारत पटना रेडियो में एक भैंसा पाल रखा है जो चीन की दीवार को टक्कर मारता रहता है ।'' ऊ भैंसा अउर केहू ना आदरणीय रामेश्वर सिंह काश्यप रहीं जे अपना 'लोहा सिंह' नाटक के जरिये चीन के बखिया उधेड़त रहीं । आपातकाल होखे भा मंडल आयोग आ कि मंदिर-मस्जिद विवाद, भोजपुरी साहित्य के नजर सब पर रहल । भले साहित्यकार लोग के ओह विषय पर आपन पसंद आ विचार अलग-अलग होखे । भोजपुरिया साहित्यकार लोग के लेखन के हद भोजपुरी आ भारत तक नइखे, एह लोग के लेखन के जद में वैश्विक समस्या भी बा, जइसे 'वैश्विक महामारी कोरोना' चाहे 'रूस यूक्रेन युद्ध' । भोजपुरी के एह साहित्यिक चेतना के गवाह ई मैगज़ीन 'भोजपुरी जंक्शन' बा ।

भोजपुरिया साहित्यकार जहाँ के अन्न पानी ग्रहण कइले बा, जहाँ रोजी-रोटी पवले बा, ओह जगह के गुन गावे, उहाँ के खासियत के बखाने में पाछे नइखे रहल । सिंहभूमि के आदिवासी लोग के शौर्य गाथा 'जयसिंहभूमि' एही भुँई पर डॉ० बच्चन पाठक सलिल जी लिखलीं । स्व० परमेश्वर दुबे शाहाबादी अपना नवगीतन में वन्य जीवन के कई एक बिम्ब संयोजित कइले बानी । आजुओ हरेराम त्रिपाठी चेतन ना खाली हिंदी काव्य संग्रह उलगुलान में बलुक भोजपुरी गीत संग्रह 'सावन के झींसी' में बनवासी जीवन के कई एक उल्लासपूर्ण क्षण के चित्रित कइले बानी । उहाँ के दोहा



www.bhojpurisahityangan.com

मकरंद के कई एक दोहा एही भाव के उकेरले बा । कनक किशोर जी के संग्रह 'धधकत सुरुज पियासल धरती' में जल, जंगल, जमीन, विस्थापन आ भगवान बिरसा के ऊपर कई एक भावपूर्ण सामग्री मिलत बा । एह लोग के अलावे अउर कई लोग के रचना में झारखंड शोभा वर्णित बा, काहे से कि झारखंड प्रवासी भोजपुरिया लोग एतहीं के निवासी हो के रह गइल बा ।

देश से बाहर विदेशन में जहाँ-जहाँ हिंदी के झंडा फहरा रहल बा, उहाँ-उहाँ पहिले भोजपुरिये पहुँचल आ आपन राज अपना मेहनत से कायम कइलस, बाकिर अपने देश में भोजपुरी उपेक्षा के शिकार हो गइल बा । लिपि, शब्दकोश, व्याकरण आ भोजपुरी साहित्य में अश्लीलता के सहारा ले के, सवाल उठा के एकर राह काटल जा रहल बा । ई भाषा ना, हिंदी के बोली ह, एकरा में साहित्य नइखे; जइसन बिना माथा-गोड़ के सवाल उठावल जाला, ई एकदम विसंगति भरल सवाल बा । अगर एकर आपन लिपि नइखे त, संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल हिन्दी आ नेपाली के आपन लिपि देवनागरी रहे का ? ऊ त संस्कृत आ मराठी के लिपि रहे, तब त, एह दुनों भाषा-हिंदी आ नेपाली का मान्यता ना मिले के चाहत रहे । जवन भाषा मैथिली के विद्वान लोग गर्व से कहेलें कि मैथिली के आपन लिपि 'मिथिलाक्षर' बा त साहित्य रचना खातिर ऊ उपयोग में काहे नइखे ? साहित्य रचना खातिर देवनागरीए काहे उपयोग में बा ? जब मिथिलाक्षर उपयोग में नइखे, देवनागरीए उपयोग में बा, त ओकरो लिपि देवनागरी भइल । तब अलग लिपि के सवाल भोजपुरी खातिर काहे उठावल जात बा ? देवनागरी वैज्ञानिक लिपि बा जवना में वर्ण आ ध्वनि के संख्या अउर लिपि से बेसी बा, जवना से लिखल-पढ़ल-समझल आसान बा । सब भाषा देवनागरी में लिखाए लागे त देश के एकता के सूत्र मजबूत



www.bhojpurisahityangan.com

होई । व्याकरण आ शब्दकोश भोजपुरी में पर्याप्त संख्या में बा । बिना जनले, जानकारी रखले कह दियात बा कि एकर व्याकरण आ शब्दकोश नइखे । जहाँ तक अश्लीलता के सवाल बा, कुछ गायक गायिका लोग ऑडियो-वीडियो में अश्लीलता जरूर परोस रहल बा, का ऊहे, ओतने भर भोजपुरी साहित्य बा, जेकरा के अश्लील कह के भोजपुरी भाषा साहित्य के राह काट दिआई । भोजपुरी में लोक साहित्य से ले के आधुनिक साहित्य तक के विशाल आ अकूत भांडार बा । भोजपुरी साहित्य में त अइसन-अइसन विषय उठावल गइल बा, जवना पर दोसरा भाषा के साहित्यकार के धेयान बहुत बाद में गइल, भा ना गइल, ऊपर हम संकेत कर चुकल बानी ।

भोजपुरी के मान्यता के पाछे जवन अवरोध भा बाधा हमरा समझ में बा, ओह तरफ हम अपने सब के धेयान खींचे के चाहत बानी । एह में पहिला अवरोध के कारण हम भोजपुरिया जनता के मानत बानी, जे अपना मूल अस्थान पर रहेला । ओह लोग का अपना मातृभाषा भोजपुरी के अस्मिता बोध नइखे । ओह लोग के पता नइखे कि भोजपुरी अगर मान्यता प्राप्त भाषा बन जाई त ओह से कवन-कवन लाभ होई । भोजपुरिया लइकन के हिंदी के जरिए भाषा ज्ञान देवेवाला शिक्षक लोग ई बतावत आइल बा कि ओह लोग के मातृभाषा हिंदी ह । भोजपुरिया क्षेत्र में निवास करेवाला मुसलमान भाई बहिन लोग जे रातो दिनों भोजपुरिये बोले-बतिआवेला आ जेकरा उर्दू के अलिफ़ तक लिखे-पढ़े ना आवे, उहो आपन मातृभाषा उर्दू बतावेला । ई बड़हन विसंगति आ विडंबना बा । अब थोड़े बहुत लोग एह बात के समझे लागल बा, बाकिर पढ़ल-लिखल ज्ञान रूढ़ भोजपुरिया लोग अबहूँ भोजपुरी के हिंदी के बोली मानेला आ हिन्दी के मातृभाषा । जवन थोड़े बहुत जागरुकता के शुरुआत भइल, ऊ ओह भोजपुरिया लोग के चलते जे प्रवासन पर गइल ।



www.bhojpurisahityangan.com

एही से औद्योगिक नगरन आ महानगरन में भोजपुरी परिवार आ भोजपुरी समाज जइसन संस्था बनल आ लोग के पता लागल कि आपन भाषा आ अपना मातृभाषा के महातम का बा । अवरोध के दुसरका कारण जनप्रतिनिधि लोग के उदासीनता भा उहे मातृभाषाई अस्मिता बोध के अभाव बा । कई गो जनप्रतिनिधि जे बड़हन संस्थान में बइठेलें, का ई पते नइखे कि संविधान के अष्टम अनुसूची का ह ? भोजपुरिया जनप्रतिनिधि लोग का भितरी वोट के डर नइखे, काहे से कि जनता ओकरा खातिर दवाब नइखे बनावत । जे भोजपुरी के संस्था बाड़ी स, ऊ कई खेमा में बँटल बा, ओकरा से जुड़ल लोग अपना-अपना के प्रोजेक्ट करे में लागल बा । भोजपुरिया जनता आ ओह लोग के जन-प्रतिनिधि लोग खातिर प्रसिद्ध कवि मोती बी० ए० जी के ई चार गो पाँति कहे के चाहत बानी-

अपना चिजुइया के जेही नाहीं बूझी
दुनिया में ओकरा के केहू नाहीं पूछी
अपने चिजुइया से अपने बेगाना
चारों ओरी खोज अइले पवले ना ठेकाना

अगिला जवन अवरोधक तत्व बा, ओकरा पीछे भोजपुरिया गवइया-नचवइया लोग कारण बा, जे सीमा तूड़ के देह के जवन अंग तोपल-ढाकल रहेला, ओकरा के शब्द में उतार-उघार के त देखावते बा, देह पर से बहतर हटाइयो के देखा रहल बा । एह खातिर उहे दोषी नइखे, ओइसन लिखवइया, देखवइया आ सुनवइया कम दोषी नइखे । अब अइसन गवइया लोग के बीच जवन प्रतिस्पर्धा बा ऊ जातीय रंग में सराबोर होखे लागल बा । भोजपुरिया समाज का अइसन लोग के बरिजे के होई ।

अगिला बाधक तत्व पर विचार करीं । एह सोशल मीडिया के जमाना में लिखवइया लोग के बाढ़ आ गइल बा पढ़वइया लोग



www.bhojpurisahityangan.com

के ना । जेकरा जवन मन करता बा, उहे लिखत बा आ आपन पीठ अपने ठोकत बा । ई लोग ना भोजपुरी साहित्य लेखन के परम्परा से अवगत बा आ ना भोजपुरी लोकसंस्कृति के समझत बा । कालगत काव्य प्रवृति के अइसन लोग ठेंगा देखा रहल बा । इस्लाहियत के जरूरत लोग नइखे समझत, जवना से भोजपुरी साहित्य धारा के विकास प्रभावित हो रहल बा ।

एगो बहुते खराब प्रवृत्ति भोजपुरी साहित्यिक समाज में घुसल जा रहल बा, ऊ बा साहित्यिक चोरी के प्रवृत्ति । तनि मनि के हेर फेर से चाहे जस-के-तस दोसरा के माल अपना नावें कर लेत बा लोग । कविता के दिसाई पहिलहूँ एह विषय पर चर्चा होखत रहल बा । स्व० बरमेश्वर सिंह अपना जीवन काल में एगो लेख लिखले रहीं। बाकिर, सुधार ना भइल । गद्य में पैरा के पैरा दोसरा के लेख से ले के अपना लेख में डाल लेत बा लोग, बिना संदर्भ बतवले । ना लेखक के नाम बतावल जात बा आ ना पुस्तक के । कोरोना काल में ऑनलाइन एह विषय पर सोशल मीडिया के प्लेटफार्म से चरचो हो चुकल बा आ नामो सब खुलल बा, बाकिर कवनो निदान ना निकलल । एह प्रवृत्ति पर रोक जरूरी बा ।

भोजपुरी के भाषा आ साहित्य के स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाई-लिखाई लगभग पचास बरिस से बिहार के विभिन्न संस्थन में होत आ रहल बा अउर इग्नू आ उ० प्र० के एक दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में हो रहल बा । नालंदा खुला विश्वविद्यालय में लगभग दस बरिस तक पढ़ाई भइला के बाद 2019-20 से स्थगित बा । भोजपुरिया लोग आपन संख्या बीस करोड़ बतावेला । ई गलत नइखे । बाकिर एह संस्थानन में दू हजार छात्र नइखन पढ़ेवाला । जहाँ पढ़ल-पढ़ावलो जा रहल बा शिक्षक के पद सृजित नइखे । कतने जन एम० ए०, पी-एच० डी० कर के



www.bhojpurisahityangan.com

बइठल बाड़न ।

हमनी का समझे के चाहीं कि अगर भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता मिल जाई त रोजगार के कई गो दुआर खुली । आसानी से ज्ञान अर्जित कइल जा सकी । जवना भाषा के मान्यता बा, राष्ट्रीय स्तर पर ओकरा माध्यम से शिक्षा देवे के व्यवस्था केन्द्र सरकार कर रहल बा । अगर भोजपुरी के मान्यता रहित त भोजपुरियो का लाभ मिलित । एह से जागीं सभे आ अपना अपना जनप्रतिनिधि लोग पर भोजपुरी के मान्यता खातिर उतजोग करे के कहीं आ वोट के डरे डेरवाई । ओह लोग का भितरी राजनीतिक इच्छाशक्ति जगावे के जरूरत बा । आ अबहीं मौका बा, चुनाव आ रहल बा । जे जवना गाँव से बा, अपना-अपना क्षेत्र में जन-जागरुकता फइलाई, वोट मांगेवालन के घेरवाई कि भोजपुरी के मान्यता खातिर आवाज ना उठावेवाला के वोट ना दिआई ।

भोजपुरी साहित्य में का बा आ कइसन बा, कुछेके लोग जानत बा, जे ओह में प्रान-पन से लागल बा । दुनिया अनजान बा, ओकरा के जनावल जरूरी बा, तब भोजपुरी के पक्ष मजबूत होई आ ना त बिना जनले-पढ़ले लोग कह देत बा कि एकरा में साहित्य के अभाव बा, आ बा त स्तरीय नइखे । एह संस्था के मेहियां आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादक पाण्डेय कपिल जी एक बेर संपादकीय लिखत 'भोजपुरी रिव्यू' (Bhojpuri Review) नामक पत्रिका निकाले के जरूरत बतवले रहीं । उहाँ के मत रहे कि एह पत्रिका में भोजपुरी साहित्य के अनुवाद छपे । किताबन आ साहित्य के बारे में जानकारी दिहल जाए । बाकिर ई संभव ना हो सकल । साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के अंग्रेजी पत्रिका 'इंडियन लिट्रेचर' के 195वॉ अंक भोजपुरी पर केंद्रित रहे, जवना में भोजपुरी के कई कवियन के कविता, कई कथाकारन के कहानी आ 'गबरघिंचोर'



www.bhojpurisahityangan.com

नाटक के अंग्रेजी अनुवाद छपल रहे । बाकिर ई ऊँट के मुँह में जीरा के फोरन साबित भइल । पं० गणेश चौबे जी अपना जीवन काल में भोजपुरी लोक साहित्य आ किताबन के बारे में अंग्रेजी लेख आ स्तम्भ लिखत रहीं । 'इंडियन फोकलोर' नाम के अंग्रेजी पत्रिका में क्षेत्रीय संपादक रूप में चौबे जी अउर अउर लेखक के सामग्री छापतो रहीं । दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे० एन० सिंह के लेख भोजपुरी साहित्य पर छपत रहल बा ।

एने कुछ लोग हिंदी का साहित्य के भोजपुरी में अनुवाद कर के आपन एड़ी उचकावत बा । एकरा से कवन लाभ ? जे भोजपुरी में लिखत-पढ़त बा, का ऊ हिंदी ना पढ़ समझ ली ? कुछ लोग हिंदी से इतर भाषा के सामग्री के अंग्रेजी भा हिंदी के माध्यम से भोजपुरी में अनुवाद कर रहल बा । जब तक स्रोत भाषा के रउरा ज्ञान नइखे त लक्ष्य भाषा में रउरा ओकरा अनुवाद में कहाँ तक न्याय करब ? रउरा हिंदी में भा अंग्रेजी में लिखिले आ छपिले, त करे के बा त भोजपुरी के सामग्री के अंग्रेजी-हिन्दी में अनुवाद करके छपवाई । भोजपुरी से छी मानुख करेवाला लोग कम से कम पढ़ी त, भोजपुरी के प्रति ओकर विचार त बदली । हमनी का एह मामला में युवा प्रोफेसर डॉ० गौतम चौबे के अनुसरण करे के चाहीं । ऊ पाण्डेय कपिल लिखित भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' के अंग्रेजी में अनुवाद कइलन जे पेंगुइन से छपल आ इतर भोजपुरिया लोग पढ़ल आ तब से कतने युवा छात्र लोग के रुझान भोजपुरी के तरफ भइल बा । संस्थान सब भोजपुरी में रुचि लेवे लागल बा । दिल्ली के प्रतिष्ठित निजी विश्वविद्यालय 'अशोका यूनिवर्सिटी 'भोजपुरी भाषा-साहित्य-संस्कृति' के विविध आयाम पर लगभग तीसहन व्याख्यान आ संगोष्ठी आयोजित कइलस ह । एही विश्वविद्यालय के 'सेंटर फॉर ट्रांसलेशन' भोजपुरी में आ भोजपुरी



www.bhojpurisahityangan.com

से अनुवाद के कई गो परियोजना चला रहल बा । साहित्य अकादमी का कई गो सिम्पोजियम आ सेमिनार में भोजपुरी पर शोध-पत्र पढ़ल गइल बा । डॉ० चौबे के मानीं त देश के कई गो नामी संस्थानन में 'फूलसुंघी' आ ओकरा भोजपुरी अनुवाद पर शोधकार्य शुरु भइल बा, जवना में आई आई टी मंडी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय शामिल बा । शोधकर्ता लोग अंग्रेज़ी विभाग से जुड़ल बा आ शोध के अलावा अनुवाद के आगे बढ़ा रहल बा । एह से हमार ओह अंग्रेजी के विद्वान भोजपुरिया लोग से निहोरा बा जे ऊ लोग भोजपुरी का साहित्य के अंग्रेजी में अनुवाद करे आ भोजपुरी साहित्य का विशेषता के बारे में अंग्रेजी में लेख लिखे चाहे दोसरा के लिखल लेख के अंग्रेजी अनुवाद करे त भोजपुरी के पक्ष मजबूत होई । 'हिंदी बचाओ मंच' का भोजपुरी के बढ़ला से आ मान्यता से हिन्दी खातिर खतरा महसूस होखत बा, एह से ऊ लोग भोजपुरी के बढ़े देवे के ना चाही । भोजपुरी के बढ़ंती के काम हिंदी से इतर भाषा के जरिये ही होई ।

भोजपुरी में फूहर-पातर गा के, लिख के, अश्लील हाव-भाव से कतने लोग कमा रहल बा, आ अपने में मगन बा । भोजपुरी के का हो रहल बा आ का होई, एह बात के चिंता ओह लोग का नइखे । ओकरे बढ़ावो मिल रहल बा । भोजपुरी भाषा साहित्य के बढंती के सब भार सुच्चा साहित्यकार-कलाकार लोग पर बा, कवनो आर्थिक सहायता कतहीं से साहित्यकार लोग के नइखे । उत्तर प्रदेश में त भोजपुरी साहित्यकार लोग का पुरस्कार में कुछ राशि भेंटाइयो जात बा त बिहार में ले दे के कबहूँ-कबहूँ एगो । पिछला बेर त उहो गायब हो गइल । बाकिर जे मातृभाषा खातिर समर्पित साहित्यकार लोग बा, ऊ अर्थ के माथ पर लात देके; अपना अन्न, कपड़ा, मकान के हिस्सा में से काट के भोजपुरी के सेवा में



www.bhojpurisahityangan.com

लागल बा आ ओकरे बले भोजपुरी के गाड़ी आगे बढ़ रहल बा । ओकरे बले, जे आपन गलवले बा, पवले कुछुओ नइखे । भोजपुरी के चिंता ओकरे बड़लो बा, दोसरा के ना । अइसने संकल्प फलित होला ।

ई अलग बात बा कि आजु काल सिनेमा में बहुत गिरावट आइल बा । भोजपुरी सिनेमा में देह उघारु आ दुअर्थी गीतन के प्रचलन बढ़ल बा । बाकिर ई माने के पड़ी कि भाषा आ संस्कृति के प्रचार प्रसार में सिनेमा एगो सशक्त माध्यम बा । हिंदी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा के योगदान कम नइखे। भोजपुरियो भाषा के प्रचार-प्रसार में एकर लमहर हाथ बा । जरूरी बा सिनेमा आ साहित्य में समन्वय के। भोजपुरी सिनेमा का खॉटी साहित्यकार लोग के सेवा जब-जब मिलल बा, भोजपुरी के पहचान निखरल बा । बाकिर सिनेमा जब-जब साहित्य से कटल बा भोजपुरी के चेहरा मलिन भइल बा । एही से बढ़िया आ साहित्य संस्कृति से जुड़ल सिनेमा के बढ़ावा मिले के चाहीं ।

आजु के जुग डिजिटल जुग बा । डिजिटल प्लेटफार्म पर जुड़ला से बड़ा तेजी से विस्तार मिलत बा आ प्रचार प्रसार हो रहल बा । भोजपुरी के सामग्री के बेसी से बेसी डिजिटाइजेशन होखे त पूरा दुनिया वाकिफ हो सकी । रंजन विकास आ रंजन प्रकाश जी लगभग हजारन किताबन आ पत्र-पत्रिकन के साहित्यांगन पर लोड कइले बानी, जवना से भोजपुरी साहित्य के पहुँच दूर दूर तक भइल बा ।

भारत के भोजपुरी समाज का मॉरिशस के भोजपुरी समाज आ नेपाल के भोजपुरी समाज से सीख लेवे के चाहीं । मॉरिशस से भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन के चेयरपर्सन के प्रयास से भोजपुरी लोकगीत के मान्यता गीत गंवई के रूप में यूनेस्को दे चुकल बा ।



www.bhojpurisahityangan.com

डॉ० गोपाल ठाकुर आ श्री गोपाल अश्क के अलावे नेपाल से कई साहित्यकार लोग उपस्थित बा । भोजपुरी नेपाल के तिसर बड़ राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त बा । दू राज्य में राजकाज के भाषा बा आ प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय सब में पढ़ावलो जा रहल बा ।

ई अधिवेशन झारखंड में हो रहल बा । झारखंड राज्य में भोजपुरी सिर्फ गढ़वा आ पलामू जिला तक सीमित नइखे । जमशेदपुर, रांची, बोकारो, धनबाद, गोड्डा आ साहेबगंज में भोजपुरिया लोग के आबादी कम नइखे । एह भोजपुरिया लोग के योगदान झारखंड के विकास में बा । एह से इहाँ के जनप्रतिनिधि लोग से निहोरा बा कि भोजपुरी भाषा के अनदेखी ना कइल जाए । शिक्षा आ रोजगार में भोजपुरी आ भोजपुरिया लोग के ओकर उचित हक हिस्सा मिले । इहाँ के भोजपुरिया भाई बहिन लोग सजग रहें ।

पिछला सदी के आखिरी दस पन्द्रह बरिस में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रतिस्पर्धा में दू तीन गो संस्था खुललीं स, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा में । बेकती के ना रहला पर चाहे रहलो पर धीरे-धीरे शिथिल पड़ गइली स । काहे कि ओह सबमें कवनो लोकतांत्रिक व्यवस्था ना रहे चाहे नइखे । कवनो व्यक्ति विशेष के इच्छा सर्वोपरि रहल । आजुओ छोट बड़ ढेरे संस्था बनत बा आ बन्न हो रहल बा, काहे कि व्यक्ति वर्चस्वी बा । बाकिर, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एकमात्र अइसन संस्था बा, जवना के खड़ा करेवाला, गठित करेवाला में से शायदे केहू एह धरती पर आज बाँचल होई, बाकिर लोकतांत्रिक तौर-तरीका के कारण ई आजुओ सक्रिय बा । पाण्डेय कपिल जी के अथवला के बाद, एह संस्था पर ग्रहन लागे लागल । एगो अइसन समय आइल कि इहो संस्था मनमाना ढंग से, संविधान के अनदेखी करत



www.bhojpurisahityangan.com

चलावल जाए लागल, जब एह संस्था में व्यक्ति विशिष्ट होखे लागल । बरिसन तक थथमा के राख दियाइल एह संस्था के । अपना लाभ खातिर एह संस्था के नाम इस्तेमाल होखत रहल । संस्था बइठे लागल रहे । एह कठिन समय के पार लगावे में एह संस्था के वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० महामाया प्रसाद विनोद जी के पुरुषार्थ काम आइल । इहें का एकर गाड़ी अपना बूते खींचत रहनी । वर्तमान महामंत्री डॉ० जयकांत सिंह 'जय' जी के बेचैनी एह संस्था के जड़ता तूड़े खातिर हमनी जानते बानी । सम्मेलन के थथमल गाड़ी के आगे बढ़ावे में युवा साहित्यकार गुलरेज शहजाद के नेतृत्व में सत्याग्रह भूँई चम्पारण के धरती, मोतिहारी के योगदान, के भुलाई आ ओह गाड़ी के गति प्रदान करे में जमशेदपुर के एह धरती के गुन काहे ना गवाई । दिल्ली से आ के रंगकमी महेंद्र प्रसाद सिंह, मऊ, उ० प्र० से डॉ० कमलेश राय जी, बक्सर से डॉ० विष्णुदेव तिवारी जी आ राँची से कनक किशोर जी, मोतिहारिए से एह गाड़ी के आगे बढ़ावे में सहयोगी भइलीं । श्री जितेन्द्र कुमार जी, आरा आ श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना के सतत सहयोग एह संस्था के साथे बा । बात त मन में बहुत कुछ बा, बाकिर थोड़ा लिखना, ढेर समझना । हम तुलसी भवन के ट्रस्टी आदरजोग अरुण तिवारी जी, मानद महासचिव आ युवाशक्ति के प्रतीक प्रसेनजीत तिवारी जी जे सम्मेलन के झारखंड ईकाई के अध्यक्ष बानी आ आपन छोट भाई अजय कुमार ओझा के एह सुन्दर आयोजन आ सुव्यवस्था खातिर कोटिशः साधुवाद देते बानी । हम आपन बात के मातृभाषा भोजपुरी के प्रति लिखल अपना एगो पुरान कविता से विराम दे रहल बानी–

सबका मन के नेह अउर तू सबका मनके आसा
देस-विदेश में बेयापत जे, ऊ भोजपुरी भासा



www.bhojpurisahityangan.com

नेपाल, गुयाना, मॉरिशस कि फीजी आ सूरीनाम
टेक रहल बा रोजे माथा, जपत रहत तोर नाम

भारत में तू बाड़ू लमहर भुँई-भाग के बोली
यू.पी., बिहार, झारखंड में हिन्दी के हमजोली

रहल न कबहूँ बाटे तहरा स्व-प्रचार के लालच
साफ साफ बोले समझे में, तनिको नाहीं घचपच

तहरा पाले बड़हन बड़ुए सबदन के भंडार
कबहूँ कोमल फूल सरिस तू, तू तेगा तरुआर

तहरे सबदन के माला से हम कविता-गीत बनाई
सुख-दुख, हँसी-खुशी जे आपन, दुनिया के बतलाई

तहरा जरिए सीख सिखवलें, गोरख बानी गइलें
साखी, बिजक रमैनी पद गा, दास कबीर सुनइलें

भोजपुरी भासा के संतति दुनिया में बा आगे
भासा में बल अतना बा जे सीमा से ना भागे

तहरे चरनन बाटे मइया आपन माथ झुकवले
हक मॉगेला लोग करोड़ों आपन हाथ उठवले

**जय भोजपुरी !** **जय भोजपुरी!!** **जय भोजपुरी!!!**

भोजपुरी माई के अदना सेवक
**ब्रजभूषण**
**( डॉ० ब्रजभूषण मिश्र )**

❖❖❖



www.bhojpurisahityangan.com